1.6 समास

'समास' शब्द सम्+अस्+घञ् पूर्वक 'अस्' (फेंकना) धातु से बना है, जो संक्षिप्त अर्थ का बोधक है। जब दो या दो से अधिक शब्दों को इस प्रकार जोड़ दिया जाए कि वे समझ आएँ[1] अर्थात् उनके आकार में कमी आ जाए परन्तु अर्थ में कोई अन्तर न आवे तो, ऐसी क्रिया को 'समास' कहते हैं तथा इस क्रिया विशिष्ट पद को सामासिक–पद कहते हैं। दोनों पदों के समर्थ होने पर ही समास किया जाता है अन्यथा नहीं–समर्थः पदविधिः। उदाहरणतया–सभायाः पतिः = 'सभापतिः' में विभक्ति सूचक प्रत्यय (याः) का लोप हो जाने से सभापतिः पद, सभायाः पतिः की अपेक्षा छोटा हो गया, परन्तु अर्थों में कोई भिन्नता नहीं आई। अतः यह समास युक्त (सामासिक) पद कहा जाएगा।

समास का वर्गीकरण

विभिन्न प्रकार के समासों को मुख्यतः कुल पाँच वर्गों में वर्गीकृत किया गया है–1. केवल समास, 2. अव्ययीभाव, 3. तत्पुरुष, 4. बहुब्रीहि तथा 5. द्वन्द्व। ध्यातव्य है कि कर्मधारय और द्विगु, इन दोनों समासों का तत्पुरुष के ही अन्तर्गत समाहार हो जाता है। अव्ययीभाव समास में प्रायः प्रथम पद प्रधान रहता है, तत्पुरुष में द्वितीय पद तथा द्वन्द्व में दोनों पद अव्ययीभाव समास में प्रायः प्रथम पद प्रधान रहता है, तत्पुरुष में द्वितीय पद तथा द्वन्द्व में दोनों पद प्रधान होते हैं, जबकि बहुब्रीहि में कोई पद प्रधान नहीं होता, अपितु दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद के विशेषण का कार्य करते हैं। इन पंचविध समासों का क्रमशः संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है[2] –

---

1 समसनं समासः

2 द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्यीभावः।
तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः।।
चकार–बहुलो द्वन्द्वः, स चासौ कर्मधारयः।
यस्य येषां बहुव्रीहिः, शेषस्तत्पुरुषो मतः।।

1. **केवल समास –** ऐसा समास, जिसे किसी विशेष नाम से अभिहित न किया गया हो, उसे केवल–समास की श्रेणी में रखा गया है 'विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः केवलसमासः' उदाहरणतया–भूतपूर्वः (जो पहले ही हो चुका हो)।

2. **अव्ययीभाव समास –** 'अव्ययीभाव' शब्द का यौगिक अर्थ होता है–'जो अव्यय न हो, उसका अव्यय हो जाना।' इस समास के दोनों पदों में प्रथम–पद प्रायः अव्यय ही होता है, जबकि दूसरा पद संज्ञा होता है। यही दोनों पद मिलकर अव्यय हो जाते हैं।[3] यथा–'अधि हरि' (हरि में)। यहाँ पर 'अधि' अव्यय है तथा 'हरि' संज्ञा लेकिन दोनों का मिला हुआ रूप–'अधिहरि' अव्यय हो जाता है। अव्यय हो जाने से किसी भी अव्ययीभाव शब्द के रूप नहीं चलते। समस्त पद सदैव नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त होता है।

3. **तत्पुरुष समास** – 'तत्पुरुष' द्वितीयपदप्रधान समास है। इसमें प्रथमपद द्वितीयपद के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है। 'तत्पुरुष' शब्द का विग्रह दो प्रकार से किया जा सकता है–तस्य पुरुषः तत्पुरुष' तथा सः पुरुष तत्पुरुषः। इस द्विविधि विग्रह के अनुसार तत्पुरुष–समास के दो मुख्य भेद होते हैं :–

(क) व्यधिकरण तथा (ख) समानाधिकरण (कर्मधारय)

(क) व्यधिकरण–तत्पुरुष समास – जिस तत्पुरुष समास में प्रथमपद तथा द्वितीयपद दोनों भिन्न–भिन्न विभक्तियों में हों, उसे 'व्यधिकरण तत्पुरुष समास' कहते हैं। उदाहरणतया–'राज्ञ पुरुषः राजपुरुषः' में प्रथमपद राज्ञः षष्ठी विभक्ति में है तथा द्वितीयपद पुरुषः प्रथमा विभक्ति में है। इस प्रकार दोनों पदों के भिन्न–भिन्न विभक्तियों में कम होने से 'व्यधिकरण–तत्पुरुष–समास' हुआ है। व्यधिकरण तत्पुरुष के छः भेद होते हैं[4] :–

(i) द्वितीया–तत्पुरुष (ii) तृतीया–तत्पुरुष (iii) चतुर्थी–तत्पुरुष (iv) पंचमी–तत्पुरुष (v) षष्ठी तत्पुरुष तथा (vi) सप्तमी तत्पुरुष समास। कहने का भाव यह है कि प्रथमपद जिस विभक्ति में होगा उस विभक्ति से सम्बद्ध तत्पुरुष कहा जाएगा, जैसे–कृष्णश्रितः में कृष्णंश्रितः। इस विग्रह के अनुसार–प्रथमपद द्वितीया विभक्ति में है। अतः यहाँ पर द्वितीया तत्पुरुष समास कहा जाएगा।

(ख) समानाधिकरण–तत्पुरुष समास – जिस 'तत्पुरुष समास' में प्रथम तथा द्वितीय दोनों पद एक ही विभक्ति में हों, उसे 'समानाधिकरण–तत्पुरुष' या कर्मधारय–समास' कहा जाता है। उदाहरणतया पदों के समान विभक्ति में होने से यहाँ पर 'समानाधिकरण–तत्पुरुष' होगा। ध्यातव्य है कि इस समास की क्रिया समास के दोनों पदों का धारण करती है, अतः इसे 'कर्मधारय' कहा जाता है। उदाहरणतया – 'कृष्णः सर्पः अपसर्पति' (काला साँप जाता है) इस

---

3 अन्वययः अव्ययः सम्द्यते इत्यव्यीभावः।

4 तं पुरुषः तत्पुरुषः, द्वितीया तत्पुरुषः। तेन पुरुषः तत्पुरुषः, तृतीया तत्पुरुषः।।
तस्मै पुरुषः तत्पुरुषः, चतुर्थी तत्पुरुषः। तस्मात् पुरुषः तत्पुरुषः, पंचमी तत्पुरुषः।।
तस्य पुरुष तत्पुरुषः, षष्ठी तत्पुरुषः। तस्मिन् पुरुषः तत्पुरुषः, सप्तमी तत्पुरुषः।।

वाक्य में सर्प की गमन क्रिया के साथ–साथ कृष्णत्व भी रहता है। समानाधिकरण तत्पुरुष के तीन प्रमुख भेद हैं, जो निम्नलिखित है –

(i) विशेषणपूर्वपद कर्मधारय – जिस समानाधिकरण–तत्पुरुष में प्रथम पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है, उसे 'विशेषणपूर्वपद' कर्मधारय कहते हैं। उदाहरणतया–नीलकमलम्। कृष्णसर्पः इत्यादि।

(ii) उपमानपूर्वपद–कर्मधारय – जिसमें एक पद उपमान (जिससे किसी की उपमा दी जाए) वाचक तथा दूसरापद साधारणधर्म (वह गुण जिसके आधार पर उपमा दी जाए) वाचक हो, वह समानाधिकरण–तत्पुरुष–उपमानपूर्वपद कर्मधारय' समास कहा जाता है। उदाहरणतया–धन इव श्यामः घनश्यामः में धन उपमान है तथा श्यामवर्ण साधारण धर्म है।

(iii) द्विगु – जिस 'समानाधिकरण तत्पुरुष' में प्रथमपद संख्यावाचक हो तथा दूसरापद संज्ञावाचक हो, उसे 'द्विगु' समास कहते हैं। उदाहरणतया–पंचानां गवानां समाहारः 'पंचगवम्' (पाँच गायों का झुण्ड)। ध्यातव्य है कि समाहार (समूह या झुण्ड) अर्थ में द्विगु समास सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में रहता है।

तत्पुरुष समास के उपभेद :– उपर्युक्त व्यधिकरण व समानाधिकरण के अतिरिक्त तत्पुरुष के कुछ अन्य गौड़ भेद भी होते हैं, जो निम्नलिखित हैं –

(i) नञ्–तत्पुरुष–समास–जिसका प्रथमपद नञ् (न) हो तथा द्वितीयपद कोई संज्ञा या विशेषण हो, उसे 'नञ्' तत्पुरुष समास कहा जाता है। यथा–अब्राह्मणः = न ब्राह्मणः।

(ii) प्रादि–तत्पुरुष समास–जिस तत्पुरुष समास का प्रथमपद 'कु' गति संज्ञक या 'प्र' आदि होता है, उसे 'प्रादि–तत्पुरुष समास' कहा जाता है। जैसे – कुपुरुषः = कुत्सितः पुरुषः। प्राचार्यः=प्रगतः आचार्यः। इत्यादि।

(iii) उपपद–तत्पुरुष–समास – जिस तत्पुरुष समास का प्रथमपद उपपद तथा द्वितीयपद कृदन्त (कृत प्रत्ययान्त) होता हैं, उसे 'उपपद तत्पुरुष समास' कहते हैं, जैसे – कुम्भकारः = कुम्भं करोति।

4. **बहुब्रीहि समास –** जिस समास में आए हुए दोनों (सभी) पद किसी अन्य पद के विशेषण स्वरूप होते हैं, वह 'बहुब्रीहि समास' होता है। 'बहुब्रीहि' शब्द का अर्थ ही होता है–जिसके पास बहुत अन्न हो वह। यहाँ पर बहु (बहुत) ब्रीहि (अन्न) का विशेषण है और दोनों (बहु तथा ब्रीहि) मिलकर किसी अन्य पद (तीसरे पद) के विशेषण बनते हैं। उदाहरणतया–'पीताम्बरः = पीतम् अम्बरम् यस्य सः' में प्रथम पद 'पीतम्' दूसरे पद 'अम्बरम्' का विशेषण अवश्य है, परन्तु पीतम् तथा अम्बरम् दोनों पद मिलकर किसी अन्यपद (कृष्ण) का विशेषण बनते हैं।

'तत्पुरुष' के ही समान बहुव्रीहि समास भी व्यधिकरण तथा समानाधिकरण भेद से दो प्रकार का अर्थ होता है। यह समास, प्रथमाविभक्ति को छोड़कर अन्य सभी विभक्तियों के योग में होता है।

इस अर्थ को लौकिक विग्रह में यद् (जो) शब्द द्वारा प्रकट किया जाता है। इस प्रकार यद् की विभक्ति को ही देखकर जाना जाता है कि समास किस अर्थ में हुआ है। जैसे–पीतम् अम्बरं यस्य = पीताम्बरः (षष्ठी विभक्ति) तथा प्राप्तम् उदकं यम् = प्राप्तोदकः (द्वितीया विभक्ति) इत्यादि।

5. **द्वन्द्व समास** – यह समस्त पद प्रधान समास है। अर्थात् अव्ययीभाव व तत्पुरुष के समान इसमें पहला या दूसरा पद प्रधान होता, अपितु सभी (दोनों) पद प्रधान होते हैं। इसके अन्तर्गत 'च' शब्द से जुड़ी हुई दो या दो से अधिक संज्ञाओं का समास होता है। द्वन्द्व का अर्थ ही होता है–दो। इस समास के मुख्यतः तीन भेद है, जो इस प्रकार है :–

(i) **इतरेतरद्वन्द्व** – जब समास में आई हुई संज्ञाएँ अपनी प्रधानता तथा पृथक् व्यक्तित्व रखती हैं, तो इसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। उदाहरणतया–शिवकेशवौ = शिवश्वकेशवश्व'। ध्यातव्य है कि यदि दो संज्ञाएँ हों तो समस्त पद द्विवचन में और यदि दो से अधिक संज्ञाएँ हों तो समस्त पद बहुवचन में प्रयुक्त होता है तथा लिंग निर्धारण उत्तर पद के अनुसार किया जाता है।

(ii) **समाहारद्वन्द्व** – जिस द्वन्द्व समास में आई हुई संज्ञाएँ, अपना अर्थ बतलाने के साथ ही साथ प्रधानतया समाहार (समूह) का बोध कराती हैं, उसे 'समाहार–द्वन्द्व' कहा जाता है। यथा–पाणिपादम् = पाणी च पादौ च। इसमें समस्तपद सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में होता है।

(iii) **एकशेषद्वन्द्व** – जिस द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों में से केवल एक ही शेष रह जाता है, उसे 'एकशेष–द्वन्द्व समास' कहा जाता है। उदाहरणतया – 'पितरौ = माता च पिता च'। समस्तपद का वचन, समास के अंगभूत शब्दों की संख्या के अनुसार होता है। यदि समास में पुलिंग व स्त्रीलिंग दोनों प्रकार के शब्द हों, तो समस्त पद पुलिंग में होता है।

नोट – लघुसिद्धान्तकौमुदीस्थ समस्त सामासिक पदों की लौकिकालौकिकविग्रह तथा समासनिर्देश पुरःसर निम्नलिखित चार्ट के माध्यम से दर्शाया गया है –

समासिकपद	**लौकिकविग्रह**	**अलौकिकविग्रह**	**समासनिर्देश**
भूतपूर्वः वागर्थाविव	पूर्वं भूतः वागार्थौ इव	पूर्व अम् भूत सु वागर्थ औ इव	केवल समास केवल समास
अधिहरि	हरौ अधि	हरि ङि अधि	अव्ययीभाव
अधिगोपम्	गोपि अधि	गोपा ङि अधि	अव्ययीभाव
उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपम्	कृष्ण ङस् उप	अव्ययीभाव
समुद्रम्	मद्राणां समृद्धिः	मद्र आम् सु	अव्ययीभाव
दुर्यवनम्	यवनानां व्यृद्धिः	यवन् आम् दुर्	अव्ययीभाव
निर्मक्षिकम्	मक्षिकाणामभावः	मक्षिका आम् निर्	अव्ययीभाव

अतिहिमम्	हिमस्यात्ययः	हिम ङस् अति	अव्ययीभाव
अतिनिद्रम्	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	निद्रा सु अति	अव्ययीभाव
इति–हरि	हरिशब्दस्यप्रकाशः	हरि ङस् इति	अव्ययीभाव
अनुविष्णु	विष्णोः पश्चाद्	विष्णु ङसि अनु	अव्ययीभाव
अनुरूपम्	रूपस्य योग्यम्	रूप ङस् अनु	अव्ययीभाव
प्रत्यर्थम्	अर्थं अर्थं प्रति	अर्थ अम् प्रति	अव्ययीभाव
यथाशक्ति	शक्तिमनतिक्रम्य	शक्ति अम् यथा	अव्ययीभाव
सहरि	हरेः सादृश्यम्	हरि ङस् सह (स)	अव्ययीभाव
अनुज्येष्ठम्	ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण	ज्येष्ठ ङस अनु	अव्ययीभाव
सचक्रम्	चक्रेण युगपत्	चक्र टा सह (स)	अव्ययीभाव
ससखि	सदृश सख्या	सखि टा सह (स)	अव्ययीभाव
सक्षत्त्रम्	क्षत्त्राणां संपत्तिः	छत्र आम् सह (स)	अव्ययीभाव
सतृणम्	तृणमप्यपरित्यज्य	तृण अम् सह (स)	अव्ययीभाव
साग्नि	अग्निग्रन्थपर्यन्तम् (अधीते)	अग्नि टा सह (स)	अव्ययीभाव
पंचगंगम्	पंचाना गंगानां समाहार	पंचन् आम् गंगा आम्	अव्ययीभाव
द्वियमुनम्	द्वयोः यमुनयोः समाहारः	द्वि ओस् यमुना ओस्	अव्ययीभाव
उपशरदम्	शरदः समीपम्	शरद ङस् उप, टच्=अ	अव्ययीभाव
प्रतिविपाशम्	विपासाया अभिमुखम्	विपाशा अम् प्रति	अव्ययीभाव
उपजरसम्	जरायाः समीपम्	जरा ङस् उप	अव्ययीभाव
उपराजम्	राज्ञः समीपम्	राजन् ङस् उप, टच्	अव्ययीभाव
अध्यात्मम्	आत्मनि	आत्मन् ङि अधि, टच्	अव्ययीभाव
उपचर्मम्	चर्मणः समीपम्	चर्मन् ङस् उप	अव्ययीभाव
उपसमिधम्	समिधः समीपे	समिध् ङस उप	अव्ययीभाव
उपासमित्	समिधः समीपे	समिध् ङस अप	अव्ययीभाव
कृष्णाश्रितः	कृष्णं श्रितः	कृष्ण अम् श्रित सु	तत्पुरुषसमास (द्वितीया)
दुःखातीतः	दुःखमतीतः	दुख अम् अतीत सु	तत्पुरुषसमास (द्वितीया)
नरकपतितः	नरकं पतितः	नरक अम् पतित सु	तत्पुरुषसमास (द्वितीया)

स्वर्गगतः	स्वर्गं गतः	स्वर्ग अम् गत सु	तत्पुरुषसमास (द्वितीया)
कूपात्यस्तः	कूपत्यस्तः	कूप अम् अत्यस्त सु	तत्पुरुषसमास (द्वितीया)
सुखप्राप्तः	सुखं प्राप्तः	सुख अम् प्राप्त सु	तत्पुरुषसमास (द्वितीया)
संकटापन्नः	संकटमापन्नः	संकट अम् प्राप्त सु	तत्पुरुषसमास (द्वितीया)
शंकुलाखण्डः	संकुलया खण्डः	शंकुला टा खण्ड सु	तृतीया तत्पुरुष
धान्यार्थः	धान्येनार्थः	धान्य टा अर्थ सु	तृतीया तत्पुरुष
हरित्रातः	हरिणा त्रात्रः	हरि टा त्रात सु	तृतीया तत्पुरुष
नखभिन्नः	नखैर्भिन्नः	नख भिस् भिन्न सु	तृतीया तत्पुरुष
नखनिर्भिन्नः	नखैर्निर्भिन्नः	नख भिस् निर् भिन्न सु	तृतीया तत्पुरुष
यूपदारु	यूपाय दारु	यूप ङे दारू सु	चतुर्थी तत्पुरुष
द्विजार्थः	द्विजाय दारु	द्विज ङे अर्थ सु	चतुर्थी तत्पुरुष
भूतबलिः	भूतेभ्यो बलिः	भूत भ्यस् सुख सु	चतुर्थी तत्पुरुष
गोसुखम्	गोभ्यः सुखम्	गो भ्यस् सुख सु	चतुर्थी तत्पुरुष
गोहितम्	गोभ्यो हितम्	गो भ्यस् हित सु	चतुर्थी तत्पुरुष
गोरक्षितम्	गोभ्यो रक्षितम्	गो भ्यस् रक्षित सु	चतुर्थी तत्पुरुष
चोरभयम्	चोराद् भयम्	चोर ङसि भय सु	पंचमी तत्पुरुष
स्तोकान्मुक्तः	स्तोकाद् मुक्तः	स्तोक ङसि मुक्त सु	पंचमी तत्पुरुष
अन्तिकादागतः	अन्तिकाद् आगतः	अन्तिक ङसि आगत सु	पंचमी तत्पुरुष
अभ्यासादागतः	अभ्याशाद् आगतः	अभ्यास ङसि आगत सु	पंचमी तत्पुरुष
दूरादागतः	दूराद् आगतः	दूर ङसि आगत सु	पंचमी तत्पुरुष
कृच्छ्रादागतः	कृच्छ्राद् आगतः	कृच्छ्र ङसि आगत सु	पंचमी तत्पुरुष
राजपुरुषः	राज्ञः पुरुष	राजन् ङस् पुरुष सु	षष्ठी तत्पुरुष
पूर्वकायः	पूर्वं कायस्य	पूर्व सु काय ङस्	षष्ठी तत्पुरुष
अपरकायः	अपरं कायस्य	अपर सु काय ङस्	षष्ठी तत्पुरुष
अर्धपिप्पली	अर्धं पिप्पल्याः	अर्ध सु पिप्पली ङस्	षष्ठी तत्पुरुष
अक्षशौण्डः	अक्षेषु शौण्डः	अक्ष सुप् शौण्ड सु	सप्तमी तत्पुरुष
अक्षधूर्तः	अक्षेषु धूर्तः	अक्ष सुप् धूर्त सु	सप्तमी तत्पुरुष

पूर्वषुकामशमी	पूर्वा च इषुकामशमी च	पूर्वा सु इषुकाशमी सु	कर्मधारय समास
सप्तर्षयः	सप्त च ते ऋषयः	सप्तन् जस् ऋषि जस्	तत्पुरुष
पौर्वशालः	पूर्वास्यां शालायां भवः	पूर्वा ङि शाला ङि	तत्पुरुष
पूर्वशालाप्रियः	पूर्वा शाला प्रिया यस्य सः	पूर्वा सु शाला सु	तत्पुरुष
पांचनापितिः	पंचनापिताः सन्ति अस्मिन्	पंचन् जस् नापित जस्	तत्पुरुष
पंचगवधनः	पंचगावो धनो यस्य	पंचन् जस् गोजस् धन सु	तत्पुरुष
पंचगवम्	पंचानां गवां समाहारः	पंचन् ङस् गो ङस्	द्विगु समास
नीलोत्पलम्	नीलमुत्पलम्	नील सु उत्पल सु	कर्मधारय समास
कृष्णसर्पः	कृष्णः सर्पः	कृष्ण सु सर्प सु	कर्मधारय समास
घनश्यामः	घन इव श्यामः	घन सु श्याम सु	कर्मधारय समास
शाकपार्थिवः	शाकप्रियः पार्थिवः	शाकप्रिय सु पार्थिव सु	कर्मधारय समास
देवब्राह्मणः	देवपूजको ब्राह्मणः	देवपूजक सु ब्राह्मण सु	कर्मधारय समास
अब्राह्मणः	न ब्राह्मणः	नञ् ब्राह्मण सु	कर्मधारय समास
अनश्वः	न अश्वः	नञ् अश्व सु	कर्मधारय समास
कुपुरुषः	कुत्सितः पुरुषः	कुत्सित सु पुरुष सु	गति तत्पुरुष
उरीकृत्य	उरीकृत्वा	उरी कृ क्त्वा	गति तत्पुरुष
शुक्लीकृत्य	अशुक्लं शुक्लं कृत्वा	शुक्ल च्चि कृ क्त्वा	गति तत्पुरुष
पटपटाकृत्य	पटत् पटत् इति कृत्वा	पटत् पटत् कृ क्त्वा डाच्	गति तत्पुरुष
सुपुरुषः	शोभनः पुरुषः	शोभन सु पुरुष सु	गति तत्पुरुष
प्राचार्यः	प्रगत आचार्यः	प्रगत सु आचार्य सु	प्रादि तत्पुरुष
अतिमालः	अतिक्रान्तो मालाम्	माला अम् अति	प्रादि तत्पुरुष
अवकोकिलः	अवक्रुष्टः कोकिलया	अव कोकिला टा	प्रादि तत्पुरुष
पर्य्यध्ययनः	परिग्लानोऽध्ययनाय	परिअध्ययन ङि	प्रादि तत्पुरुष
निष्कौशाम्बिः	निष्क्रान्तः कौशम्ब्याः	निस् कौशाम्बी ङसि	प्रादि तत्पुरुष
कुम्भकारः	कुम्भं करोति	कुम्भ ङस् कार सु	उपपद तत्पुरुष
द्वयङ्गुलम्	द्वेअङ्गुलीप्रमाणमस्य	द्वि औ अंगुलि औ	द्विगु समास
निरंगुलम्	निर्गतमङ्गुलिभ्यः	निर् अंगुलि ङसि	प्रादि समास

अहोरात्रः	अहश्च रात्रिश्च	अहन् सु रात्रि सु	द्वन्द्व समास
सर्वरात्रः	सर्वाः रात्रयः च	सर्वा जस् रात्रि जस्	कर्मधारय समास
संख्यातरात्रः	संख्याता रात्र्यः	संख्याता जस् रात्रि जस्	कर्मधारय समास
द्विरात्रम्	द्वयोः रात्र्यों समाहारः	द्वि ओस् त्रि ओस्	द्विगु समास
त्रिरात्रम्	त्रयाणां रात्रीनां समाहारः	त्रि आम् रात्रि आम्	द्विगु समास
अतिरात्रिः	अतिक्रान्तो रात्रिम्	अति रात्रि अम्	प्रादि तत्पुरुष
परमराजः	परमश्च असौ राजा च	परम् सु राजन् सु	कर्मधारय
महाराजः	महान् च असौ राजा	महत् सु राजन् सु	कर्मधारय
महाजातीयः	महा प्रकारः	महत् जातीयर	कर्मधारय
द्वादश	द्वौ च दश च	द्वि औ दशन् अस्	द्वन्द्व समास
अष्टाविंशतिः	अष्ट च विंशतिश्च	अष्टन् जस् विंशति जस्	द्वन्द्व समास
कुक्कुटमयूर्यौ	कुक्कुटश्च मयूरी च	कुक्कुट सु मयूरी सु	द्वन्द्व समास
मयूरीकुक्कुटौ	मयूरी च कुक्कुटश्च	मयूरी सु कुक्कुट सु	द्वन्द्व समास
पंचकपालः	पंचसु कपालेषु संस्कृत (पुरोडाशः)	पंचन् सुप् कपाल सुप्	द्विगु समास
प्राप्तजीविकः	प्राप्तो जीविकाम्	प्राप्त सु जीविका अअम्	तत्पुरुष
आपन्नजीविकः	आपन्नो जीविकाम्	आपन्न सु जीविका अम्	तत्पुरुष
अलंकुमारिः	अलं कुमार्यै	कुमारी ङे अलम्	तत्पुरुष
अर्धर्चः	अर्धम् ऋचः	ऋच् ङस् अर्ध सु	षष्ठी तत्पुरुष
कण्ठेकालः	कण्ठे कालः यस्य सः	कण्ठ ङि काल सु	बहुब्रीहि समास
प्राप्तोदको	प्राप्तम् उदकम् यम् सः	प्राप्त सु उदक सु	बहुब्रीहि समास
पीताम्बरः	पीतम् अम्बरम् यस्य सः	पीत सु अम्बर सु	बहुब्रीहि समास
प्रपर्णः	प्रपतितानि पर्णानि यस्मात्	प्रपतित जस् पर्ण जस्	बहुब्रीहि समास
अपुत्रः	अविद्यमानो पुत्रः यस्य	अविद्यमान सु पुत्र सु	बहुब्रीहि समास
चित्रगुः	चित्रा गावो यस्य	चित्रा जस् गो जस्	बहुब्रीहि समास
रूपवद्भार्य	रूपवती भार्या यस्य	रूपवद् सु भार्या सु	बहुब्रीहि समास
वामोरूभार्यः	वामोरुः भार्या यस्य	वामोरू सु भार्या सु	बहुब्रीहि समास
कल्याणी पंचमाः	कल्याणी पंचमी यासां	कल्याणी सु पंचमी सु	बहुब्रीहि समास

	रात्रीणाम्		
स्त्रीप्रमाणः	स्त्रीप्रमाणी यस्य	स्त्री सु प्रमाणी सु	बहुब्रीहि समास
दीर्घसक्थः	दीर्घे शक्थिनी यस्य	दीर्घम् औ सक्थि औ	बहुब्रीहि समास
जलजाक्षी	जलजे इव अक्षिणी यस्याः	जलज औ अक्थि औ	बहुब्रीहि समास
द्विमूर्द्धः	द्वौ मूर्द्धानौ यस्य	द्वि औ मूर्द्धन् औ	बहुब्रीहि समास
त्रिमूर्द्धः	त्रयः मूर्द्धानः यस्य	त्रि जस् मूर्द्धन् जस्	बहुब्रीहि समास
अन्तर्लोमः	अन्तर्लोमानि यस्य	लोम जस् अन्तः	बहुब्रीहि समास
बहिर्लोभः	बहिर्लोमानि यस्य	लोभ जस् बहिः	बहुब्रीहि समास
व्याघ्रपात्	व्याघ्रस्येव पादौ यस्य	व्याघ्र ङस पाद् औ	बहुब्रीहि समास
हस्तिपादः	हस्तिन् इव पादौ यस्य	हस्तिन् ङस् पद् औ	बहुब्रीहि समास
कुसूलपादः	कुसुलस्य इव पादौ यस्य	कुसूल ङस् पाद् औ	बहुब्रीहि समास
द्विपात्	द्वा पादौ यस्य	द्वि औ पद् औ	बहुब्रीहि समास
सुपात्	शोभनौ पादौ यस्य	शोभन औ पद ओ	बहुब्रीहि समास
उत्काकुत्	उद्गतं काकुदं यस्य	उद्गत सु काकुद सु	बहुब्रीहि समास
विकाकृत्	विगतं काकुदं यस्य	विगत सु काकुद सु	बहुब्रीहि समास
पूर्णकाकुम्	पूर्णं काकुद यस्य	पूर्ण सु काकुद सु	बहुब्रीहि समास
सुहृद्	शोभनं हृदयं यस्य सः	शोभन् सु हृद् सु	बहुब्रीहि समास
दुर्हृद	दुष्यं हृदयं यस्य स	दुष्ट सु हृद सु	बहुब्रीहि समास
व्यूढोरस्कः	व्यूढम् उरो यस्य	व्यूढसु उरस् सु	बहुब्रीहि समास
प्रियसर्पिष्कः	प्रियं सर्पिः यस्य	प्रिय सु सर्पिषु सु	बहुब्रीहि समास
युक्तयोगः	युक्तो योगो येन यस्य वा	युक्त सु योग सु	बहुब्रीहि समास
महायशस्कः	महत् यशो यस्य सः	महत् सु यशस् सु	बहुब्रीहि समास
महायशाः	महत् यशो यस्य सः	महत् सु यशस् सु	बहुब्रीहि समास
धवखदिरौ	धवश्च खदिरश्च	धव सु खदिर सु	द्वन्द्व समास
संज्ञापरिभाषम्	संज्ञा च परिभाषा च	संज्ञा सु परिभाषा सु	द्वन्द्व समास
राजदन्तः	दन्तानां राजा	दन्त ङस् राजन् सु	षष्ठी समास
अर्थधर्मौ	अर्थश्च धर्मश्च	अर्थ सु धर्म सु	द्वन्द्व समास

हरिहरौ	हरिश्च हरश्च	हरि सु हर सु	द्वन्द्व समास
ईशकृष्णौ	ईशश्च कृष्णश्च	ईश सु कृष्ण सु	द्वन्द्व समास
शिवकेशवौ	शिवश्च केशवश्च	शिव सु केशव सु	द्वन्द्व समास
पितरौ	माता च पिता च	मातृ सु पितृ सु	द्वन्द्व समास
पाणिपादम्	पाणी च पादौ च	पाणि औ अद् औ	द्वन्द्व समास
मार्दङ्गिकवैणविकम्	मार्दङ्गिकश्च वैणविकश्च	मार्दङ्गिक सु वैणविक सु	द्वन्द्व समास
रथिकाश्वारोहम्	रथिकाश्च अश्वारोहाश्च	रथिक जस् अश्वारोही सज्	द्वन्द्व समास
वाक्त्वचम्	वाक् च त्वक् च	वाक् सु त्वक सु	द्वन्द्व समास
त्वकस्रजम्	त्वक च स्रक् च	त्वक् सु स्रक् सु	द्वन्द्व समास
शमीदृषदम्	शमी च दृशद् च	शमी सु दृशद् सु	द्वन्द्व समास
वाक्त्विचम्	वाक् च त्विष च	वाक सु त्विष सु	द्वन्द्व समास
छत्रोपानहम्	छत्रश्च उपाहनश्च	सत्र सु उपानह सु	द्वन्द्व समास
प्रावृट्शरदौ	प्रावृट् च शरच्च	पावृट् सु शरत् सु	द्वन्द्व समास
अश्ववक्रीती	अश्वेन क्रीता	अश्वटा क्रीत टाप ङीष्	कारक समास
कच्छपी	कच्छेन पिवति	कच्छ टा पा ङीष्	उपपद समास
व्याघ्री	व्याजिघ्रति	वि आङ् घ्रा क ङीष्	गति तत्पुरुष
आशातीतः	आशाम् अतीतः	आशा अम् अतीत सु	द्वितीया तत्पुरुष

1.7 सारांश

इस इकाई में संस्कृत वाक्यों के अङ्ग–उपाङ्ग रूप में वाच्य एवं समास का ज्ञान कराया गया है। विभिन्न उदाहरणों के द्वारा सूत्रों एवं लक्षणों को स्पष्ट कराया गया है। समास में विग्रह–पदच्छेद की विधि स्पष्ट की गई है। प्रत्येक पहलुओं को ध्यान में रखकर समास के नियम को सुगम व सुबोध्य रूप में उपस्थापिक किया गया है।

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्त कौमुदी – श्री वरदराजाचार्यः
2. लघुसिद्धान्त कौमुदी – आचार्य भीमसेन शास्त्री